गोरे नंद जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात ।
चुटकी दै-दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसुकात ।
तू मोहीं कौं मारन सीखी दाउहिं
कबहूँ न खीझै ।
मोहन मुख रिस की ये बातैं,
जसुमति सुनि-सुनि रीझै ।
सुनहु कान्हा, बलभद्र चबाई,
जनमत ही को धूत ।
सूर स्याम मोहि गोधन की सौं,
हौं माता तू पूत ।।

खण्ड 'ख'

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **3×12=36**

(i) सूरदास रचित 'सूरसागर' के आधार पर यशोदा की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

(ii) सूर का काव्य 'ब्रज संस्कृति का दर्पण है' सटीक उत्तर दीजिए ।

(iii) 'सूरसारावली' का प्रतिपाद्य बताते हुए उसकी प्रामाणिकता सिद्ध कीजिए ।

(iv) सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विवेचना कीजिए ।

(v) आधुनिक संदर्भों में सूरकाव्य की प्रासंगिकता बताइए ।

(vi) सूर की काव्य भाषा की विवेचना कीजिए ।

Roll No. ..... **Exam Code : J-21**

Subject Code—53630

M. A. EXAMINATION

(Batch 2017-2019)

(Fourth Semester)

HINDI (Elective Subject)

Hi-120

P Prapadh, Surdas

Time : 3 Hours *Maximum Marks :* 80

नोट : **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

खण्ड 'क'

1. किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **3×7=21**

(i) उलटि पग कैसे दीन्हौं नंद ।
छाँड़े कहाँ उभै सूत मोहन
धिक जीवन मतिमंद ।
कै तुम धन-जोवन-मद मांते,
कै तुम छूटे बंद ।

सुफलक-सुत बैरी भयौ हमकौ,
लै गयौ आनंदकंद।
राम कृष्ण बिन कैसै जीजै,
कठिन प्रीति कै फंद।
सूरदास मैं भई अभागिन, तुम बिनु गोकुलकंद।

(ii) ऊधौ हम आजु भई बड़ भागी ।
जिन आखियन तुम स्याम बिलोके,
ते अँखिया हम लागी ।
जैसे सुमन बास लै आवत,
पवन मधुप अनुरागी।
अति आनंद होत है तैसै, अंग-अंग सुख रागी।
ज्यौं दरपन मैं दरस देखियत,
दृष्टि परम रुचि लागी ।
तैसै सूर मिले हरि हमकौं, बिरह-बिथा तन त्यागी ।।

(iii) हमारे निर्धन के धन राम ।
चोर न लेत, घटत नहीं कबहूँ आवत गाढ़ै काम
जल नहीं बूड़त, अगिनि न दाहत,
है ऐसौ हरि नाम।
बैकुंठनाम सकल सुख-दाता, सूरदास-सुख-धाम ।।

(iv) तुम्हरे देस कागद मसि खूटी ।
भूख प्यास अरू नींद गई सब,
बिरह लरौ तन लूटी।
दादुर मोर पपीहा बोले, अवधि भई सब झूठी।
पाछैं आइ तुम कहा करौगे, जब तन जैहै छूटी।
राधा कहति सँदेस स्याम सौं,
भई प्रीति की टूटी।
सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन बिनु,
सखी करति हैं कूटी ।।

(v) राधा नैन नीर भरि आए ।
कबधौं मिलैं स्याम सुंदर सखि,
जदपि निकट हैं आए ।
कहा करौं किहिं भाँति जाहुँ अब,
पंख नहीं तन पाए ।
सूर स्याम सुन्दर घन दरसैं, तन के ताप नसाए।

(vi) मैया मोहिं दाउ बहुत खिझायौ ।
मोसौं कहत मोल को लीन्हौ,
तू जसुमति कब जायौ ।
कहा करौं इहि रिस के मारै
खेलन हौं नहिं जात।
पुनि-पुनि कहत कौन है माता,
को है तेरो तात।

खण्ड 'ग'

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **250** शब्दों में होना चाहिए : **5×3=15**

(i) सूरदास की 'नवधा भक्ति' पर टिप्पणी लिखिए।

(ii) सूरदास जी के जन्मांध होने के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए ।

(iii) व्यंग्य और वक्रोक्ति की दृष्टि से 'भ्रमरगीत' की विशेषताओं का संक्षेप में निरूपण कीजिए।

(iv) सूर के दृष्टिकूटों की विशेषता बताइए ।

(v) अष्टछाप के कवियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

(vi) सूर की अलंकार योजना का परिचय दीजिए ।

(vii) सूरदास के विनय व दैन्य भाव के पदों पर प्रकाश डालिए ।

(viii) कृष्ण काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर टिप्पणी कीजिए ।

(ix) सूरदास के भ्रमरगीत का प्रतिपाद्य लिखिए ।

(x) साहित्य-लहरी की प्रामाणिकता पर विचार कीजिए।

खण्ड 'घ'

4. **सभी** वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **1×8=8**

(i) नंददास, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास व परमानंददास में से कौन-सा कवि गोस्वामी विट्ठलनाथ का शिष्य नहीं है ?

(ii) सूरदास के आराध्य देव कौन हैं ?

(iii) सूर ने भगवान कृष्ण के किस प्रिय वाद्य-यंत्र का बारंबार वर्णन किया है ?

(iv) बनी मोतिन की माल मनोहर ।
शोभित स्याम सुभग उर-ऊपर मनो गिरि तें सुरसरी धसी धर — में कौनसा अलंकार है ?

(v) अष्टछाप के कवियों का नाम लिखिए ।

(vi) "पुष्टि मार्ग को जहाज जात है सो जाको कछु लेना होय सो लेऊ" यह पंक्ति किसने और किसके संदर्भ में कही थी तथा कब कही थी ?

(vii) सूरकाव्य में 'हारिल की लकरी' किसे कहा गया है ?

(viii) सूरदास की कौन-सी कृति हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि मानी जाती है ?